GST

Hindi GST - Greek Aligned

एज्रा

संस्करण 44.1

[hi]

कॉपीराइट और लाइसेंसिंग

Hindi GST - Greek Aligned
तारीख: 2023-09-12
संस्करण: 44.1
द्वारा प्रकाशित: BCS

unfoldingWord® Hebrew Bible
तारीख: 2022-10-11
संस्करण: 2.1.30
द्वारा प्रकाशित: unfoldingWord

unfoldingWord® Greek New Testament
तारीख: 2023-09-26
संस्करण: 0.34
द्वारा प्रकाशित: unfoldingWord

License

Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International (CC BY-SA 4.0)

This is a human-readable summary of (and not a substitute for) the full license found at http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/.

You are free to:

- **Share** — copy and redistribute the material in any medium or format
- **Adapt** — remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

Under the following conditions:

- **Attribution** — You must give appropriate credit, provide a link to the license, and indicate if changes were made. You may do so in any reasonable manner, but not in any way that suggests the licensor endorses you or your use.
- **ShareAlike** — If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.

No additional restrictions — You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

Notices:

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.

विषयसूची

एज्रा **4**
Chapter 1 4
Chapter 2 4
Chapter 3 6
Chapter 4 7
Chapter 5 8
Chapter 6 9
Chapter 7 10
Chapter 8 11
Chapter 9 12
Chapter 10 13

योगदानकर्ताओं **15**
Hindi GST - Greek Aligned योगदानकर्ताओं 15

एज्रा

Chapter 1

1पहले साल के दौरान जब कुस्रू ने फ़ारसी साम्राज्य पर शासन किया, तो उसने कुछ ऐसा किया जिससे एक भविष्यद्वाणी पूरी हुई जिसे यिर्मयाह ने बोला था। यहोवा ने कुस्रू को यह सन्देश लिखने के लिए प्रेरित किया, और फिर कुस्रू ने अपने पूरे साम्राज्य में इस सन्देश की घोषणा करवाई:

2"मैं, राजा कुस्रू, फारसी साम्राज्य पर शासन करता हूँ, और मैं यह कहता हूँ: कि यहोवा, परमेश्वर जो स्वर्ग में है, उसने मुझे पृथ्वी पर बड़े राज्यों पर शासक बनाया है। अब उसने मुझे {सुनिश्चित करूँ कि उसके लोगों ने} यहूदा के यरूशलेम में उसके लिये एक मन्दिर बनाने के लिये नियुक्त किया है। 3परमेश्वर से संबंधित तुम सब लोग यहूदा में यरूशलेम को जा सकते हो ताकि यहोवा के लिए इस मन्दिर का पुनर्निर्माण किया जाए, परमेश्वर जो यरूशलेम में है, जो इस्राएल का परमेश्वर है। और परमेश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करे! 4और जो लोग इस्त्राएलियों की बन्धुआई में रहने वाले स्थान में रह रहे हों, और जिनके पूर्वज यहाँ बंधुआई में आए थे, वे जानेवालों को चाँदी और सोना भेंट में दें। उन्हें यहूदियों को {निश्चित} सामान भी देना चाहिए {जिसकी उन्हें यरूशलेम की यात्रा के लिए आवश्यकता होगी}। वे उन्हें कुछ पशुओं के झुंड और धन की भेंटें भी दें, ताकि वे यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के निर्माण में सहायक हो।"

5तब परमेश्वर ने कुछ याजकों और लेवियों को और यहूदा और बिन्यामीन के {गोत्रों के} कुलों के अगुवों में से {कुछ} को यरूशलेम लौटने के लिए प्रेरित किया। जिन लोगों को परमेश्वर ने प्रेरित किया, वे यरूशलेम लौटने और वहाँ उसके लिए मन्दिर बनाने के लिए तैयार हो गए। 6उनके कई पड़ोसियों ने उन्हें यात्रा के लिए चाँदी और सोने की वस्तुएँ, पशुधन और आपूर्ति देकर उनकी मदद की। उन्होंने उन्हें अन्य मूल्यवान उपहार भी दिए, और उन्हें मन्दिर के निर्माण के लिए वस्तुएँ खरीदने के लिए धन दिया। 7राजा कुस्रू उन मूल्यवान वस्तुओं को बाहर निकाल लाया जो राजा नबूकदनेस्सर {के सैनिकों} ने यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर से ले ली थीं और अपने देवताओं के मन्दिरों में (बाबेल में) रखी थीं। 8फारस के राजा कुस्रू ने अपने खजाँची मिथ्रदात को आज्ञा दी, कि वह इन सब वस्तुओं को बाहर निकाले, और उनमें से प्रत्येक को यहूदा के प्रधान शेशबस्सर {के उस दल को दे दे, जो लौट जाने पर था}। 9यह उन वस्तुओं की सूची है {जो कुस्रू ने दान की थी}: 30 सोने के परात, 1000 चाँदी के परात, 29 अन्य परात, 1030 सोने के कटोरे, 410 वैसे ही चाँदी के कटोरे, और 1000 अन्य वस्तुएँ। 11सब मिलाकर, कुस्रू ने शेशबस्सर को चाँदी और सोने की 5400 वस्तुएँ दीं, ताकि जब वह और अन्य बाबेल से यरूशलेम को लौटे तो उन्हें अपने साथ ले जाए।

Chapter 2

1बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर {की सेना} ने कई इस्राएलियों को पकड़ लिया था और उन्हें बाबेल ले गया था। {कई वर्षों बाद,} कुछ इस्राएली यहूदा लौट गए। कुछ यरूशलेम को लौट गए, और कुछ यहूदा में अन्य स्थानों में लौट गए। वे उन नगरों में गए जहाँ उनके पूर्वज रहते थे। लौटने वाले समूहों की सूची यह है। 2लौटने वाले लोगों के अगुवों में जरुब्बाबेल, येशुअ, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम और बानाह थे।

यहूदा लौटने वाले लोगों के समूह की सूची आगे दी गई है।

3परोश के वंशजों में से 2, 172

4शपत्याह के वंशजों में से 372

5आरह के वंशजों में से 775

6पहत्मोआब के वंशज येशुअ और योआब के परिवारों में से 2, 812

7एलाम के वंशजों में से 1, 254

8जत्तू के वंशजों में से 945

9जक्कई के वंशजों में से 760

10बानी के वंशजों में से 642

11बेबै के वंशजों में से 623

12अजगाद के वंशजों में से 1, 222

13अदोनीकाम के वंशजों में से 666

14बिगवै के वंशजों में से 2, 056

15आदीन के वंशजों में से 454

16आतेर के वंशजों में से 98, जो हिजकिय्याह के वंशजों में से था

17बेसै के वंशजों में से 323

18योरा के वंशजों में से 112

19हाशूम के वंशजों में से 223

20गिब्बार के वंशजों में से 95

21{वे लोग जिनके पूर्वज यहूदा के इन नगरों में रहते थे:}

बैतलहम में से 123

22नतोपा में से 56

23अनातोत में से 128

24अज्मावेत में से 42

25किर्यत्यारीम, कपीरा और बेरोत में से 743

26रामाह और गेबा में से 621

27मिकमाश में से 122

28बेतेल और आई में से 223

29नबो में से 52

30मग्बीस में से 156

31एलाम में से 1, 254

32हारीम में से 320

33लोद, हादीद और ओनो में से 725

34यरोही में से 345

35सना में से 3, 630

36लौटने वाले याजकों में ये थे:

यदायाह के वंशज में से 973 (अर्थात् वे जो येशुअ के वंशज थे)

37इम्मेर के वंशज में से 1, 052

38पशहूर के वंशज में से 1, 247

39हारीम के वंशज में से 1, 017

40लौटने वाले लेवीयों में ये थे:

येशुअ और कदमीएल के वंशज में से 74, जो होदब्याह के परिवार से थे

41 128 गवैये जो आसाप के वंशज थे

42 139 द्वारपाल जो द्वारपालों शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज थे

43 ये मन्दिर में काम करने सेवक जो लौटे आए थे। वे इन पुरुषों के वंशज थे: सीहा, हसूपा, तब्बाओत, 44 केरोस, सीअहा, पादोन, 45 लबाना, हगाबा, अक्कूब
46 हागाब, शल्मै, हानान 47 गिद्देल, गहर, रायाह, 48 रसीन, नकोदा, गज्जाम, 49 उज्जा, पासेह, बेसै, 50 अस्ना, मूनीम, नपीसीम, 51 बकबूक, हकूपा, हर्हूर,
52 बसलूत, महीदा, हर्शा, 53 बर्कोस, सीसरा, तेमह, 54 नसीह, और हतीपा।

55 राजा सुलैमान के सेवकों के ये वंशज यरूशलेम को लौट आए: सोतै, हस्सोपेरेत, परुदा, 56 याला, दर्कोन, गिद्देल, 57 शपत्याह, हत्तील, पोकेरेत-सबायीम, और
आमी। 58 कुल मिलाकर, मन्दिर के सेवकों और सुलैमान के सेवकों के 392 वंशज लौट आए।

59 एक और समूह था जो बाबेल के तेल्मेलाह, तेलहर्शा, करूब, अद्दा और इम्मेर में से यहूदा लौट आया था। पर वे यह साबित नहीं कर सके कि वे सच्चे
इस्राएली थे। 60 इस समूह में 652 लोग थे जो दलायाह, तोबियाह और नकोदा के वंशज थे। 61 इस समूह के याजकों के वंशजों में हबायाह के गोत्र, हक्कोस के
गोत्र और बर्जिल्लै के गोत्र के लोग थे। बर्जिल्लै ने एक स्त्री से विवाह किया था जो गिलाद क्षेत्र की बर्जिल्लै की वंशज थी। उसने अपने लिए अपने ससुर के गोत्र
का नाम अपना लिया था। 62 उस समूह के लोगों ने उन दस्तावेजों में खोज की, जिनमें सभी गोत्रों के पूर्वजों के नाम थे, पर उन्हें इन पुरुषों के नाम नहीं मिले।
इसलिए उन्होंने उन्हें उस काम को नहीं करने दिया जो याजकों किया करते थे। 63 राज्यपाल ने उनसे कहा कि उन्हें पवित्र पत्र डालने के द्वारा यहोवा से परामर्श
करने के लिए एक याजक से परामर्श लेने की आवश्यकता पड़ेगी {, यह निर्धारित करने के लिए कि क्या वे पुरुष सच्चे इस्राएली थे}। {यदि पत्र से पता चलता है
कि वे पुरुष इस्राएली थे,} तो उन्हें याजकों को दिए जाने वाले बलिदानों में से उनका भाग खाने की अनुमति दी जाएगी।

64 कुल मिलाकर, 42360 इस्राएली यहूदा लौट आए थे। 65 वहाँ 7, 337 सेवक और 200 गवैये भी थे, दोनों पुरुष और स्त्रियाँ, जो लौट आए थे। 66 इस्राएली
अपने साथ बाबेल से 736 घोड़े, 245 खच्चर, 67 435 ऊँट, और 6,720 गदहे लाए थे।

68 जब वे यरूशलेम में यहोवा के भवन में पहुँचे, तो गोत्रों में से कुछ अगुवों ने मन्दिर को फिर से उसी स्थान पर जहाँ पुराना मन्दिर था बनाने के लिये आवश्यक
धन दिया। 69 उन्होंने अपनी योग्यता अनुसार अधिक से अधिक धन दिया। उन्होंने कुल मिलाकर 61,000 सोने के सिक्के, 5000 चाँदी के टुकड़े और याजकों
के लिए 100 वस्त्र दिए।

70 ये याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, मन्दिर के सेवक, और अन्य लोग थे, जो {यहूदा के प्रान्त के} नगरों और गाँवों में रहने के लिए लौट आए थे। वे उन स्थानों
पर बस गए जहाँ उनके पूर्वज रहते थे।

Chapter 3

1 जब इस्राएली {वापस आए और} उनके अपने-अपने नगरों में रहने लगे, तो उस वर्ष की शरद ऋतु में, वे सभी यरूशलेम में इकट्ठे हुए। 2 तब योसादाक का पुत्र
येशुअ और उसके संगी याजक और शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल और उसके सहायक सब मिलकर इस्राएल के परमेश्वर की वेदी बनाने लगे। उन्होंने ऐसा
इसलिए किया कि वे उस पर होमबलि चढ़ा सकें। वे व्यवस्था की उन बातों का पालन करना चाहते थे जिसे भविष्यद्वक्ता मूसा ने लिखा था जो परमेश्वर ने उसे
दी थीं। 3 यद्यपि वे उन लोगों से डरते थे जो पहले से ही उस क्षेत्र में रह रहे थे, उन्होंने वेदी को उसी स्थान पर फिर से बनाया जहाँ पिछली वेदी थी। वे प्रतिदिन
सुबह और शाम को उस पर यहोवा के लिए बलिदानों को चढ़ाने लगे। 4 {इन बलिदानों को चढ़ाने के पंद्रह दिनों के बाद,} लोगों ने झोपड़ियों का पर्व मनाया।
{मूसा ने उन्हें यह आज्ञा दी थी कि वे इसे परमेश्वर की दी हुई विधियों के अनुसार करें।} प्रतिदिन याजक उस दिन के लिए आवश्यक बलिदानों को चढ़ाते थे।
5 तब से, उन्होंने नित्य होमबलि और {अन्य आवश्यक} भेंटों को चढ़ाया। नए चाँद के त्योहार और अन्य त्योहारों के लिए {ये थे} जिन्हें उन्होंने प्रति वर्ष यहोवा को
आदर देने के लिए विशेष समयों के रूप में मनाया। वे यहोवा के लिए अन्य भेंटों को भी केवल इसलिए ले आए क्योंकि वे चाहते थे {, इसलिए नहीं कि उन्हें इन्हें
लाना आवश्यक था}। 6 पर यद्यपि उन्होंने पतझड़ के आरम्भ में यहोवा के लिये होमबलि लाना आरम्भ कर दिया था, तौभी उन्होंने अभी तक मन्दिर का
पुनर्निर्माण आरम्भ नहीं किया था। 7 इस कारण इस्राएलियों ने राजमिस्त्रियों और बढ़ई को {निर्माण कार्य करने के लिए} काम पर रखा। उन्होंने सोरी और
सीदोनी के नगरों के लोगों से देवदारु के वृक्षों से लट्ठे भी खरीदे। उन्होंने उन लोगों को बदले में भोजन, दाखरस और जैतून का तेल दिया। वे लोग लट्ठों को
लबानोन के पहाड़ों से {भूमध्य सागर के तट तक} ले आए और फिर उन्हें तट के किनारे याफा तक ले आए। राजा कुस्रू ने कहा था कि वे ऐसा कर सकते हैं।
{तब वे लट्ठों को भीतरी मार्ग द्वारा याफा से यरूशलेम तक ले आए।}

8 इस्राएलियों ने यरूशलेम में लौटने के बाद दूसरे वर्ष की वसंत ऋतु में मन्दिर का पुनर्निर्माण शुरू किया। शालतीएल का पुत्र जरुब्बाबेल, योसादाक का पुत्र
येशुअ, और उनके संगी याजक अगुवे और लेवीय, और जितने लोग यरूशलेम को लौट गए थे, उन सब ने इस काम में सहायता की। उन्होंने बीस वर्ष या उससे
अधिक आयु वाले लेवियों को मन्दिर के पुनर्निर्माण के काम की निगरानी करने के लिए नियुक्त किया। 9 येशुअ, उसके पुत्रों, और उसके अन्य कुटुम्बियों, और
कदमीएल और उसके पुत्रों ने मिलकर मन्दिर के काम की देखरेख करने में सहायता की। वे सब यहूदा के वंशज थे। जो लोग हेनादाद के वंशज थे, और उनके
पुत्र और उनके कुटुम्बी, जो सब लेवीय भी थे, उनके साथ आ जुड़े। 10 जब राजमिस्त्रियों ने मन्दिर की नेव डालने का काम समाप्त किया, तब याजक ने अपने
वस्त्र पहने लिए, और अपने स्थान पर तुरहियों को बजाने के लिए खड़े हो गए। तब आसाप के वंशज लेवीय ने यहोवा की स्तुति करने के लिए अपनी झांझों को

बजाया। {कई वर्षों पहले,} राजा दाऊद ने आसाप और अन्य गवैयों को ऐसा ही करने के लिए कहा था। 11उन्होंने यहोवा की स्तुति की और उसे धन्यवाद दिया, और उन्होंने उसके विषय में यह गीत गाया:

“वह हमारे लिए बहुत ही भला है!

वह इस्राएल के साथ अपनी बनाई वाचा की विश्वासयोग्यता का आदर करता है {, और वह हम से प्रेम करेगा} सदैव।" तब सब लोग ऊँची आवाज से चिल्लाने लगे। उन्होंने यहोवा की स्तुति की क्योंकि उन्होंने उसके मन्दिर की नींव को डालना समाप्त कर लिया था। 12बहुत से बुजुर्ग याजकों, लेवियों, और परिवारों के अगुवों ने स्मरण किया कि पहला मन्दिर कैसा था। जब उन्होंने सेवकों को इस मन्दिर की नींव डालते देखा तो वे ऊँची आवाज से रोने लगे {क्योंकि उन्हें लगा कि नया मन्दिर पहले मन्दिर जितना सुंदर नहीं होगा}। पर अन्य लोग आनन्द के मारे ऊँची आवाजों में चिल्लाने लगे। 13चूँकि चिल्लाना बहुत अधिक ऊँचा था, इसलिए कोई नहीं बता सकता था कि कौन चिल्ला रहा है और कौन रो रहा है। शोर इतना अधिक था कि दूर-दूर के लोग भी इसे सुन सकते थे।

Chapter 4

1यहूदा और बिन्यामीन {के गोत्रों के लोगों} के शत्रुओं ने सुना कि वे बाबेल से लौट आए हैं और इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिये मन्दिर का निर्माण कर रहे हैं। 2तब वे राज्यपाल जरुब्बाबेल और अन्य गोत्रों के अगुवों के पास गए, और उनसे कहा, हम भवन के निर्माण में तुम्हारी सहायता करना चाहते हैं। आखिरकार, हम उसी परमेश्वर की आराधना करते हैं जिसकी तुम करते हो। जब से अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन हमें यहाँ लाया है, तब से हम उसके लिए बलिदानों को चढ़ाते आए हैं।”

3परन्तु जरुब्बाबेल, येशुअ और यहूदी गोत्रों के अन्य अगुवों ने उत्तर दिया, “हम अपने परमेश्वर के लिए मन्दिर बनाने में तुम्हारी सहायता नहीं लेंगे। नहीं, केवल हम ही इसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिए बनाएंगे, क्योंकि फारस के राजा कुस्रू ने हमें ऐसा ही करने की आज्ञा दी है।”

4तब {इस्राएलियों के लौटने से पहले} जो लोग उस देश में रह रहे थे उन्होंने यहूदियों को हताशा करने और डराने का प्रयास किया ताकि वे मन्दिर का निर्माण बंद कर दें। 5यहूदियों को मन्दिर के काम को करते रहने से रोकने के लिए उन्होंने सरकारी अधिकारियों को घूस दी। उन्होंने यह सब उस समय तक किया जब कुस्रू फारस का राजा था, और ठीक उस समय तक किया जब दारा फारस का राजा नहीं बन गया।

6तब दारा के पुत्र क्षयर्ष के राजा होने के पहले वर्ष में यहूदियों के शत्रुओं ने यहूदा प्रदेश और यरूशलेम नगर में रहनेवालों के विषय में उसे शिकायत से भरा हुआ एक पत्र लिखा {इसमें कहा गया कि वे सरकार के विरुद्ध बलवा करने की योजना बना रहे थे।}

7बाद में, जब अर्तक्षत्र फारस का राजा था, तब बिशलाम, मिथ्रदत, ताबेल और उनके साथियों ने उसे एक पत्र लिखा। उन्होंने किसी से अपने लिए अरामी भाषा में अरामी वर्णमाला का उपयोग करते हुए पत्र लिखवाया।

8उच्च आयुक्त रहूम और प्रांतीय सचिव शिमशै ने राजा अर्तक्षत्र को यह पत्र लिखा कि यरूशलेम में क्या घटित हो रहा था।

9उन्होंने कहा कि यह पत्र उच्च आयुक्त रहूम, प्रांतीय सचिव शिमशै, और उनके सहयोगियों, न्यायियों और अन्य सरकारी अधिकारियों की ओर से भेजा गया था, जो एलाम जिले में शूशनी, और फारस, एरेकी, बाबेली से थे। 10{उन्होंने यह भी लिखा कि वे प्रतिनिधित्व करते हैं} अन्य लोगों के समूह का जिन्हें महान और प्रतापी ओस्नप्पर ने निर्वासित किया था और सामरिया के नगरों में और फ़रात नदी के पश्चिम वाले शेष प्रांतों में रहने के लिए भेजा था। 11जो पत्र उन्होंने उसे भेजा उसमें उन्होंने यह लिखा:

यह पत्र राजा अर्तक्षत्र के लिए है। यह फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त में तेरी सेवा करने वाले अधिकारियों की ओर से भेजा गया है।

12"महामहिम, हम चाहते हैं कि तुझे यह विदित हो कि जो यहूदी तेरे क्षेत्रों से यहाँ आकर यरूशलेम नगर का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। वे लोग दुष्ट हैं और तेरे विरुद्ध बलवा करना चाहते हैं। वे अब {उस नगर की} दीवारों का पुनर्निर्माण कर रहे हैं और {उसके भवनों की} नींवों की मरम्मत कर रहे हैं। 13तेरे लिए यह जानकारी महत्वपूर्ण है कि यदि वे इस नगर का पुनर्निर्माण करते हैं और इसकी दीवारों का निर्माण कर लेते हैं, तो वे किसी भी तरह के करों को देना बंद कर देंगे। परिणामस्वरूप, तेरे खजाने में धन की कम हो जाएगी।

14अब, क्योंकि हम तेरे प्रति निष्ठावान हैं, और क्योंकि हम नहीं चाहते कि तेरे अपमान हो, इन कारणों से हम तुझे यह जानकारी भेज रहे हैं। 15हम तुझे सुझाव देते हैं कि तू अपने पूर्ववर्तियों द्वारा रखे गए अभिलेखों में से {अपने अधिकारियों को आदेश दें} खोज करे। {यदि तू ऐसा करता है,} तू पाएगा कि इस नगर के लोगों ने सदैव अपने शासकों के विरुद्ध बलवा किया है। तू जान लेगा कि इन लोगों ने बहुत समय तक राजाओं और प्रान्तों के शासकों के लिए परेशान खड़ी की है। इस शहर के अगुवों ने बलवा आरम्भ कर दिया है। यही कारण है कि {बाबेल की सेना} ने इस नगर को नष्ट कर दिया था। 16हम चाहते हैं कि तू यह जान ले कि यदि वे इस नगर को फिर से बना लेते हैं, और इसकी दीवारों का निर्माण कर लेते हैं, तो तू फ़रात नदी के पश्चिम वाले इस प्रान्त के किसी भी व्यक्ति को अपने अधीन नहीं रख पाएगा।”

17{इस पत्र को पढ़, उसने} राजा ने {बाद में} उन्हें यह उत्तर भेजा:

“हे रहूम, उच्च आयुक्त, और शिमशै, जो प्रांतीय सचिव, और सामरिया में और फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त के अन्य भागों में रहने वाले तेरे साथियों को मैं अपनी शुभ कामनाएँ भेजता हूँ।

18मेरे अधिकारियों ने उस पत्र को ध्यान से पढ़ा है जो तुमने मुझे भेजा था। 19तब मैंने अपने अधिकारियों को अभिलेखों की खोज करने का आदेश दिया। मुझे पता चला है कि यह सच है कि यरूशलेम के लोगों ने सदैव अपने शासकों के विरुद्ध बलवा किया है, और यह नगर बलवा करने वाले और परेशानी पैदा करने वाले लोगों से भरा हुआ है। 20बीते समय में, सामर्थी राजाओं ने यरूशलेम पर शासन किया। उन्होंने फ़रात नदी के पश्चिम वाले पूरे प्रान्त पर भी शासन किया। उन्होंने वहाँ के लोगों को हर तरह के करों को देने के लिए मजबूर किया।

21इसलिए तू उन लोगों को आज्ञा दे कि वे नगर का पुनर्निर्माण करना बन्द कर दें। उन्हें फिर से आरम्भ करने की अनुमति तभी दी जाएगी जब मैं उन्हें बताऊँगा कि वे इसका पुनर्निर्माण कर सकते हैं। 22इस काम को शीघ्रता से कर, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वे लोग मेरे हितों को नुकसान पहुँचाने के लिए कुछ भी ऐसा करें।”

23जैसे ही सन्देशवाहकों ने राजा अर्तक्षत्र से रहूम और प्रांतीय सचिव शिमशै और उनके सहयोगियों को पत्र पढ़ कर सुनाया, वे शीघ्रता से यरूशलेम में यहूदियों के पास गए, और उन्होंने उन्हें पुनर्निर्माण बंद करने के लिए मजबूर कर दिया। 24इसका परिणाम यह हुआ कि यहूदियों ने यरूशलेम में मन्दिर का पुनर्निर्माण बंद कर दिया। उन्होंने दारा के फारस का राजा बनने के दूसरे वर्ष तक मन्दिर के पुनर्निर्माण के प्रति और कोई काम नहीं किया।

Chapter 5

1उस समय दो भविष्यद्वक्ता यरूशलेम और यहूदा के अन्य नगरों में रहने वाले यहूदियों को परमेश्वर की ओर से सन्देश दे रहे थे। ये भविष्यद्वक्ता हाग्गै और इद्दो का पुत्र जकर्याह थे। उन्होंने अपने सन्देश को उस परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हुए दिया जिसकी इस्राएली आराधना करते थे। 2तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक के पुत्र येशुअ ने बहुत से लोगों की यरूशलेम में परमेश्वर के भवन के पुनर्निर्माण को आरम्भ करने अगुवाई दी। और परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जकर्याह उनके साथ थे और उनकी सहायता कर रहे थे।

3पर तब फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त का राज्यपाल तत्तनै और शतर्बोजनै अपने कुछ अधिकारियों के साथ यरूशलेम गए और लोगों से कहने लगे, "तुम्हें इस भवन को बनाने की आज्ञा किस ने दी है?" 4उन्होंने यहूदियों से उन लोगों के नाम बताने को भी कहा जो इस मन्दिर को बनाने का काम कर रहे थे।

5तौभी, परमेश्वर की दृष्टि यहूदी अगुवों के ऊपर थी, और उनके शत्रुओं ने उन्हें नहीं रोका। इसके स्थान पर, शत्रुओं ने राजा दारा को एक सूचना भेजी और उसके द्वारा भेजे जाने वाली राजाज्ञा की प्रतीक्षा की {जो या तो उसकी अनुमति और सुरक्षा प्रदान करेगी ताकि यहूदी अगुवे मन्दिर के संबंध में अपना काम पूरा कर सकें, या फिर अपना काम पूरी तरह से बंद कर दें}।

6यह उस सूचना की एक प्रति है जिसे नदी-से-पार वाले प्रान्त के राज्यपाल तत्तनै, शतर्बोजनै, और उनके सहयोगियों, नदी-से-पार वाले प्रान्त के उनके अधिकारियों ने राजा दारा के पास भेजी थी। 7जब उन्होंने उसके पास सूचना भेजी, तो उस में उन्होंने यह लिखा:

“राजा दारा, हम आशा करते हैं कि तू कुशल क्षेम से है।

8हम चाहते हैं कि तू यह जान ले कि हम यहूदा प्रान्त में महान परमेश्वर के मन्दिर में गए थे। लोग इसका निर्माण बड़े-बड़े पत्थरों से कर रहे हैं और दीवारों में लकड़ी की कड़ियाँ जोड़ रहे हैं। वे इस काम को अत्याधिक सावधानी से कर रहे हैं और इसमें सफल होते चले जा रहे हैं।

9इस कारण हमने यहूदी अगुवों से पूछा, 'कि किसने तुम्हें इस मन्दिर के पुनर्निर्माण की अनुमति दी है?' 10ताकि हम तुझे सूचित कर सकें, कि हमने उनसे उनके नाम भी पूछें हैं। हम तुझे उन लोगों के नाम भेज रहे हैं जो उनके अगुवे हैं।

11और उन्होंने हमें उत्तर में यह बताया है। उन्होंने कहा, 'कि हम स्वर्ग और पृथ्वी के रचने वाले परमेश्वर की आराधना करते हैं। हम उसके मन्दिर का पुनर्निर्माण कर रहे हैं, जिसे इस्राएल के एक महान राजा ने कई वर्षों पहले बनाया था। उसने इसका निर्माण एक भव्य भवन के रूप में किया था। 12परन्तु हमारे पूर्वजों ने ऐसे काम किए जिससे परमेश्वर जो स्वर्ग में है, अत्याधिक क्रोधित हुआ। इसलिए परमेश्वर ने बाबेल के राजा, नबूकदनेस्सर, एक कसदी को उन पर जय पाने दिया। उसकी सेना ने उस मन्दिर को नष्ट कर दिया, और वे बहुत से इस्राएलियों को बाबेल ले गए।

13यद्यपि, अपने पहले वर्ष के दौरान जब कुस्रू ने बाबेल के राजा के रूप में शासन किया, उसने राजाज्ञा दी थी कि हम लोग परमेश्वर के इस मन्दिर का पुनर्निर्माण कर सकते हैं। 14परमेश्वर के मन्दिर में कुछ सोने और चाँदी के प्याले थे। नबूकदनेस्सर उन्हें यरूशलेम के मन्दिर से उठाकर बाबेल के अपने मन्दिर में ले आया था। राजा कुस्रू ने भी उस मन्दिर में से उन कटोरे को हटाकर शेशबस्सर नाम के एक व्यक्ति को दे दिया था, जिसे उसने यहूदा का राज्यपाल ठहराया था। 15राजा ने उससे कहा कि इन वस्तुओं को ले जा और जाकर यरूशलेम के मन्दिर में रख दे। उसने यह भी आदेश दिया कि यहूदियों को उस स्थान पर मन्दिर का पुनर्निर्माण करना चाहिए जहाँ वह पहले खड़ा हुआ था। 16तब शेशबस्सर यरूशलेम में आया और मन्दिर की नींव डालने वालों के कार्यों का निरीक्षण किया। और उस समय से, लोग मन्दिर को बनाने का काम कर रहे हैं, पर उन्होंने इसे अभी तक समाप्त नहीं किया है।'

17इसलिए, हे महामहिम, कृपया अपने अधिकारियों को बाबेल में उस स्थान में खोज करने का आदेश दे जहाँ तू राजकीय अभिलेखों को रखता है। ताकि वह यह पता लगाएँ कि क्या यह सच है कि राजा कुस्रू ने यहूदियों को यरूशलेम में परमेश्वर के इस मन्दिर का पुनर्निर्माण करने का आदेश दिया था या नहीं। तब तू हमें बता सकता है कि हमें इस विषय में क्या करना चाहिए।"

Chapter 6

1तब राजा दारा ने किसी को आज्ञा दी कि वह उस स्थान में खोज करे जहाँ उसने बाबेल के महत्वपूर्ण अभिलेख रखे हुए थे। 2उन्हें मादै नामक प्रान्त के गढ़ वाले नगर अहमता में एक कुण्डलपत्र मिला {जिसमें वह जानकारी थी जिसे वे जानना चाहते थे}। इस कुण्डलपत्र में ऐसा कहा गया था:

3"जब कुस्रू ने अपने साम्राज्य पर शासन किया, तब उसने परमेश्वर के मन्दिर के विषय में जो यरूशलेम में था, एक राजाज्ञा निकाली थी। उसने कहा कि यहूदियों को उसी स्थान पर एक नया मन्दिर बनाना चाहिए जहाँ वे बलिदानों को पहले चढ़ाया करते थे। यह मन्दिर 27 मीटर ऊँचा और 27 मीटर चौड़ा बनाया जाना चाहिए। 4उसने उन्हें बड़े पत्थरों से मन्दिर का निर्माण करने के लिए कहा था। पत्थरों की तीन परतें {नीचे डालने के बाद}, {मजदूरों को} नई लकड़ी की एक परत {उनके ऊपर} रखनी चाहिए। इस पर आने वाली लागत के लिए राजकोष से पैसा दिया जाएगा। 5उसने सोने और चाँदी की वस्तुओं के बारे में भी आदेश दिया जो परमेश्वर के मन्दिर से संबंधित थीं। नबूकदनेस्सर ने इन्हें यरूशलेम के मन्दिर से ले लिया था और बाबेल ले आया था। कुस्रू ने यहूदियों से कहा कि वे इन्हें ले जाएँ और वापस यरूशलेम के मन्दिर में रख दें। उसने उनसे कहा कि वे प्रत्येक को मन्दिर में उसके मूल स्थान पर वापस रख दें।"

6{इसे पढ़ने के बाद, राजा दारा ने यरूशलेम में यहूदियों के शत्रुओं के अगुवों के पास यह सन्देश भेजा:} "यह सन्देश तुम्हारे लिए है, तत्तनै, फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त का राज्यपाल, तेरे लिए, शतर्बोजनै, और तेरे सभी साथियों, उस प्रान्त के अधिकारियों के लिए: इस काम से अपने को अलग रखो! 7उन्हें परमेश्वर के उस मन्दिर के पुनर्निर्माण का कार्य करते रहने दिया जाए। यहूदियों के राज्यपाल और उनके अगुवों को इस नए मन्दिर के निर्माण में अपने लोगों की अगुवाई उसी स्थान पर बनाने के लिए करने दी जाए जहाँ पहले वाला मन्दिर था। 8इसके अतिरिक्त, मैं तुम्हें परमेश्वर के इस मन्दिर का पुनर्निर्माण करते समय यहूदियों के इन अगुवों की मदद करने की आज्ञा देता हूँ। तुझे इन लोगों को धन देना सुनिश्चित करना होगा ताकि वे निर्माण कार्य करते रहें। इसके लिए जो कर तू फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त में इकट्ठा करता है, उसे मेरे राजकोष में से ले सकता है। 9यरूशलेम के याजक तुझे बताएँगे कि उन्हें किन वस्तुओं की आवश्यकता है। इसमें बछड़े और मेढ़े और मेम्ने शामिल हो सकते हैं जो स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को होमबलि के रूप में चढ़ाए जाते हैं। इसमें गेहूँ, नमक, दाखमधु और जैतून का तेल भी {उन बलिदानों को चढ़ाएँ जाने के लिए} शामिल हो सकता है। उन्हें ये वस्तुएँ प्रतिदिन दे। 10यदि तू ऐसा करेगा, तो वे ऐसे बलिदानों को चढ़ा सकेंगे जो स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, और वे प्रार्थना करेंगे कि परमेश्वर मुझे और मेरे पुत्रों को आशीष दे।

11इस राजाज्ञा का पालन न करने वाले हर किसी को मैं यह आदेश देता हूँ। मेरे सैनिक उसके घर से एक कड़ी निकालेंगे {और उसके एक छोर को नुकीला करेंगे}। फिर वे उस व्यक्ति को उसके ऊपर टांग देंगे {और उसके शरीर में इसके नुकीले सिरे को आरपार कर देंगे} और उस कड़ी को हवा में लटका देंगे। तब वे उस व्यक्ति के घर को तब तक नष्ट करते रहेंगे जब तक कि वह एक कूढ़े का ढेर मात्र नहीं रह जाता, क्योंकि उसने आज्ञा नहीं मानी। 12परमेश्वर ने स्वयं यरूशलेम को उस स्थान के रूप में चुना है जहाँ पर लोग उसका आदर करेंगे। वह किसी भी राजा या किसी भी जाति से बचा रहे जो इस राजाज्ञा को बदलने या यरूशलेम में उस मन्दिर को नष्ट करने का प्रयास करता है! मैं, दारा, ने इस राजाज्ञा को दिया है। तुझे इसका पूरी तरह से पालन करना चाहिए।"

13फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रांत का राज्यपाल तत्तनै, और शतर्बोजनै और उनके साथियों ने राजा दारा के सन्देश को पढ़ा और तुरन्त उसकी आज्ञा का पालन किया। 14इसलिए यहूदी अगुवे मन्दिर के पुनर्निर्माण के काम को करते रहे। भविष्यद्वक्ता हाग्गै और इद्दो के पुत्र जकर्याह द्वारा सुनाए सन्देश ने उन्हें बहुत ज्यादा उत्साहित किया। लोग मन्दिर को बनाते रहे, ठीक वैसे ही जैसा कि उनके परमेश्वर ने उन्हें बनाने की आज्ञा दी थी, और जैसा कि फारसी राजाओं कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र ने आदेश दिया था। 15राजा दारा के शासन के छठे वर्ष के अदार महीने के तीसरे दिन उन्होंने इस भवन का निर्माण पूरा कर लिया।

16तब इस्राएल के लोग, याजक, लेवीय, और बाबेल से लौटे हुए सब लोगों ने इस भवन के समर्पण के उत्सव को आनन्दपूर्वक मनाया। 17इस मन्दिर को समर्पित करने के समारोह के समय, उन्होंने 100 बछड़ों, 200 मेढ़ों और 400 मेम्नों का बलिदान चढ़ाया। उन्होंने 12 बकरों को भी भेंट के रूप में बलिदान में चढ़ाया ताकि परमेश्वर सब लोगों के पापों को क्षमा करे, क्योंकि इस्राएल में इतने ही गोत्र थे। 18तब यहूदी अगुवों ने याजकों और लेवियों को समूहों में बांट दिया जो बारी-बारी से यरूशलेम में परमेश्वर के भवन में सेवा करते थे। उन्होंने यह उसी अनुसार किया जिसे मूसा ने व्यवस्था में {कई वर्षों पहले} लिखा था।

19पहले महीने के चौदहवें दिन, बाबेल से लौटने वाले यहूदियों ने फसह का पर्व मनाया। 20{बलिदानों को चढ़ाने के लिए योग्य होने के लिए,} सभी याजकों और लेवियों ने पहले से ही उचित अनुष्ठान करके अपने आप को शुद्ध कर लिया था। तब उन्होंने अन्य याजकों के लिए, और अपने लिए और उन सभी के लाभ के लिए मेम्नों को बलिदान में चढ़ाया जो बाबेल से लौटे थे। 21बाबेल से लौटेने वाले इस्राएलियों ने अपने आप को अपने चारों ओर के अशुद्ध लोगों से अलग कर लिया था {जिनकी संस्कृति, भाषा और आराधना भिन्न थी। और इसलिए वे अब सक्षम थे} इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आराधना कर सकते थे {, और फसह का भोजन खा सकते थे}। 22उन्होंने अख़मीरी रोटी के पर्व को सात दिनों तक आनन्द से मनाया। वे आनन्दित हुए क्योंकि यहोवा ने उनके प्रति अश्शूर के राजा के रवैये को बदल दिया था। परिणामस्वरूप, राजा ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के मन्दिर के पुनर्निर्माण में उनकी सहायता की।

Chapter 7

1कई वर्षों बाद, जब अर्तक्षत्र फारस का राजा था, एज्रा {बाबुल से यरूशलेम चला गया। वह} हिल्कियाह के पुत्र अजर्याह के पुत्र सरायाह का वंशज था।
2हिल्कियाह शल्लूम का पुत्र था, जो सादोक का पुत्र था, जो अहीतूब का वंशज था। 3जो अमर्याह का वंशज था, जो अजर्याह का पुत्र या, जो मरायोत का
वंशज था, 4जो जरहयाह का पुत्र था, जो उज्जी का पुत्र था, जो बुक्की का पुत्र था, 5जो अबीशू का पुत्र था, जो पीनहास का पुत्र था, जो एलीआजर का पुत्र था,
जो हारून, {प्रथम} प्रधान याजक का पुत्र था। 6एज्रा एक ऐसा व्यक्ति था जो मूसा की व्यवस्था को अच्छी तरह जानता था। ये वे कानून थे जिन्हें इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा ने इस्राएलियों को दिए थे। {एज्रा के बाबेल छोड़ने के बाद} राजा ने लोगों से कहा कि वह जो कुछ भी मांगे वह उसे दे। इन विषयों में उसके
परमेश्वर यहोवा ने उस पर अत्याधिक कृपादृष्टि की थी।

7मंदिर में काम करने वाले कुछ इस्राएली, कुछ याजक, कुछ लेवीय, कुछ गवैये, कुछ द्वारपाल, और कुछ लोग एज्रा के साथ यरूशलेम गए। यह समय सातवें
वर्ष में फारस के राजा अर्तक्षत्र का था। 8एज्रा (और उसके साथ वाला समूह) सातवें वर्ष के पाँचवें महीने में यरूशलेम पहुँचा जब अर्तक्षत्र राजा था।

9इस पर ध्यान दें: वे पहले महीने के पहले दिन बाबेल से निकले। वे उस वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन सुरक्षित यरूशलेम पहुँचे। परमेश्वर ने निश्चय ही उन
पर अत्याधिक कृपादृष्टि बनाई रखी। 10{अपने पूरे जीवन में,} एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अध्ययन करने और उसका पालन करने के तरीके को समझने के
लिए अपने आप को समर्पित कर दिया था। उसने उन व्यवस्थाओं में से सब कुछ को इस्राएलियों को {कई वर्षों तक} सिखाया।

11राजा अर्तक्षत्र ने याजक और शास्त्री एज्रा को यह आज्ञा दी थी जिसने इस्राएल को दी हुई व्यवस्था के विषय में यहोवा की आज्ञाओं का अध्ययन किया था।:

12"यह पत्र राजाओं में महानतम अर्तक्षत्र की ओर से है। मैं इसे एज्रा याजक को दे रहा हूँ, जिसने स्वर्ग में वास करने वाले परमेश्वर की व्यवस्था {इस्राएलियों को
दी} का सावधानी से अध्ययन किया है । नमस्कार। मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों को जानें।

13मैं आज्ञा देता हूँ कि मेरे राज्य में रहने वाला कोई भी इस्राएली यदि वह जाना चाहे तो तुम्हारे साथ यरूशलेम जा सकता है। इसमें याजक और लेवीय भी
शामिल हैं।

14{यहाँ कुछ और प्रबन्ध किए गए हैं।} मैं और मेरे सात सलाहकार तुझे यह देखने के लिए भेज रहे हैं कि यहूदा और यरूशलेम के लोग तेरे परमेश्वर की
व्यवस्था का पालन कर रहे हैं या नहीं। 15हम तुझ से यह भी कह रहे हैं कि मैं और मेरे सलाहकारों द्वारा दिए जाने वाला चाँदी और सोना अपने साथ ले जा। हम
चाहते हैं कि तू इसे इस्राएल के परमेश्वर को भेंट के रूप में चढ़ाए जिसका यरूशलेम में एक मंदिर है। 16तू और चाँदी और सोना भी अपने साथ ले जो बाबेल
{के लोग} का सारा प्रान्त तुझे दे। साथ ही वह धन भी अपने साथ ले जिसे इस्राएलियों और याजकों ने कहा है कि वे यरूशलेम में उनके परमेश्वर के भवन के
निर्माण के लिए भेंट में चढ़ाने के लिए तुझे खुले मन से देंगे। 17और तब तू तुरन्त इस धन को लेकर उन बछड़ों, मेढ़ों, और मेम्नों को मोल लेना, जिन्हें याजक तेरे
परमेश्वर के भवन की वेदी पर भेंट चढ़ाएँगे जो यरूशलेम में है। और अन्न और दाखमधु भी मोल ले जो इन भेंटों के साथ चढ़ाया जाता है।

18यदि {उन सभी चीजों को खरीदने के बाद} कोई चाँदी या सोना बचता है, तो तू और तेरे साथी इसका उपयोग उन सब वस्तुओं को मोल लेने के लिए कर
सकते हैं जो तुझे महत्वपूर्ण लगती हैं। उन वस्तुओं को मोल ले जिन्हें तू जानता है कि तेरा परमेश्वर तुझसे चाहता है कि तू उन्हें खरीदे। 19हम ने तुझे तेरे परमेश्वर
के मन्दिर में याजकों के उपयोग के लिये कुछ मूल्यवान वस्तुएँ भी दी हैं। उन्हें यरूशलेम में अपने परमेश्वर के पास ले जा। 20यदि तेरे मन्दिर के लिए तुझे किसी
अन्य वस्तु की आवश्यकता है तो राजकीय खजाने से उन वस्तुएँ के लिए धन {तुझे अनुमति है} को ले।

21और मैं, राजा अर्तक्षत्र, व्यक्तिगत रूप से फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त के सभी कोषाध्यक्षों को यह आदेश देता हूँ: एज्रा एक याजक है जिसने सावधानी
से स्वर्ग में वास करने वाले परमेश्वर की व्यवस्था का अध्ययन किया है। यदि उसका कुछ भी निवेदन है, तो उसे शीघ्रता से दो। 22उसे सवा तीन दशांश टन चाँदी,
500 ढेर तक गेहूँ, दो और एक का पाँचवाँ हिस्सा किलोलीटर दाखमधु, जैतून का तेल की भी इतनी ही मात्र, और जितना नमक वह मांगता है उतना दो। 23यह
सुनिश्चित कर कि तू उस सब का प्रबन्ध करे जो स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर को अपने मन्दिर के लिए चाहिए। हम निश्चय ही नहीं चाहते कि परमेश्वर मुझ से या
मेरे वंशजों से (जो बाद में राजा होंगे) क्रोधित हो। 24हम तुझे यह भी आज्ञा देते हैं कि किसी भी याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, या मन्दिर के सेवकों से कर नहीं
लेना। {उन्हें करों को देने में छूट है क्योंकि} वे परमेश्वर के इस मंदिर में काम करते हैं। 25एज्रा, तेरे पास तेरे परमेश्वर की बुद्धि है। इसका उपयोग ऐसे पुरुषों को
नियुक्त करने के लिए कर जो विवादों को सुलझा सकते हों और फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रांत में लोगों के लिए व्यवस्था की व्याख्या कर सकते हों। उन्हें ऐसा
उनके लिए करना चाहिए जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्थाओं को जानते हैं, और तुझे उन सभी को उन लोगों को सिखाना चाहिए जो उन्हें नहीं जानते हैं। 26तेरे
परमेश्वर की व्यवस्था या मेरी सरकार के कानून का पालन नहीं करने वाले प्रत्येक को कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। तू निर्णय कर सकता कि उन्हें प्राण दण्ड
दिया जाए या उन्हें देश निकाला दिया जाए या उनकी सारी संपत्ति ले ली जाए या उन्हें कैद में डाल दिया जाए।"

27तब मैं, एज्रा, ने कहा, यहोवा की स्तुति करो, उस परमेश्वर की जिसकी आराधना हमारे पूर्वजों ने की! उसने राजा को यरूशलेम में अपने मंदिर का आदर
करने के लिए प्रेरित किया है। 28परमेश्वर मेरे प्रति इतना अधिक दयालु रहा कि राजा और उसके सलाहकार और उसके सभी सामर्थी अधिकारी मेरी मदद करने
के लिए तैयार थे। जब परमेश्वर ने इस तरह से मेरी मदद की, तो इससे मुझे हियाव मिला। मैं इस्राएल के कुछ अगुवों को अपने साथ यरूशलेम लौटने के लिए
राजी कर सका।"

Chapter 8

1जब अर्तक्षत्र फारस का राजा था तब बाबेल से मेरे साथ यरूशलेम लौटने वाले घरानों के अगुवों के नामों की सूची यह है:

2हारून के पोते पीनहास के घराने के वंशजों में से गेर्शोम आया।

हारून के पुत्र ईतामार के घराने के वंशजों में से दानिय्येल आया।

राजा दाऊद घराने के वंशजों में से हत्तूश आया, **3**शकन्याह का एक वंशज आया।

जकर्याह और उसके 150 पुरुष परोश के धराने के वंशजों से आए।

4जरहयाह का पुत्र एल्यहोएनै और उसके घराने के 200 अन्य पुरुष पहत्मोआब के वंशजों से आए।

5यहजीएल का पुत्र और उसके घराने के 300 पुरुष शकन्याह के वंशजों से आए।

6योनातान का पुत्र एबेद और उसके घराने के 50 अन्य पुरुष आदीन के वंशजों से आए।

7अतल्याह का पुत्र यशायाह और उसके घराने के 70 अन्य पुरुष एलाम के वंशजों से आए।

8मीकाएल का पुत्र जबद्याह और उसके घराने के 80 अन्य पुरुष शपत्याह के वंशजों से आए।

9यहीएल का पुत्र ओबद्याह और योआब के घराने के वंशजों में से 218 और पुरुष आए।

10योसिव्याह का पुत्र और शलोमीत के घराने के वंशजों में से 160 अन्य पुरुष आए।

11बेबै का पुत्र जकर्याह और उसके घराने के वंशजों में से 28 और पुरुष {एक दूसरे व्यक्ति से जिसका नाम था} बेबै से आए।

12हक्कातान का पुत्र योहानान और उसके घराने के वंशजों में से 110 अन्य पुरुष अजगाद से आए।

13एलीपेलेत, यूएल, और शमायाह नामक तीन पुरुष, और अदोनीकाम के घराने के वंशजों में में 60 अन्य पुरुष आए, जो जरूब्बाबेल के साथ पहले नहीं लौटे थे।

14ऊतै, जक्कूर और बिगवै के घराने के वंशजों में से 70 अन्य पुरुष आए।

15एज्रा ने कहा, "मैंने सब यहूदियों को बाबेल से अहवा की ओर बहने वाली नहर के पास इकट्ठा किया। हमने अपने तम्बू गाड़े और तीन दिन वहीं रहे। उस समय में मैंने {नामों की सूचियाँ पढ़ीं और} पाया कि हमारे साथ इस्राएली और याजक तो जा रहे थे, पर कोई लेवीय नहीं था। **16**तब मैंने एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, और एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम नामक एक अन्य पुरुष को जो लोगों के अगुवे थे, बुलवा भेजा। मैंने योयारीब और एलनातान {नामक तीसरे व्यक्ति} को भी बुलाया, जो शिक्षक थे। **17**मैंने उन सभी को इद्दो के पास भेज दिया, जो कासिप्या नामक स्थान पर रहने वाला लेवीयों का एक अगुवा था। मैंने उन से कहा, कि इद्दो से और मन्दिर के उन सेवकों से क्या कहना है जिसे उसने भी वहाँ देखा था। मैं चाहता था कि वे मन्दिर में काम करने के लिए {हमारे साथ जाने के लिए} कुछ लोगों को भेजें।

18क्योंकि परमेश्वर की हम पर कृपादृष्टि थी, वे हमारे पास शेरेब्याह नाम एक बहुत ही बुद्धिमान व्यक्ति और उसके 18 पुत्रों और अन्य रिश्तेदारों को ले आए। वह महली का वंशज था, जो इस्राएल के पुत्र लेवी का पोता था। **19**उन्होंने हमारे पास हशब्याह और यशायाह और उसके 20 भाइयों और उनके पुत्रों को भी भेजा। दोनों पुरुष मरारी {लेवी के पुत्र} के वंशज थे। **20**उन्होंने मन्दिर में काम करने के लिए 22 पुरुषों को भी भेजा। राजा दाऊद और उसके अधिकारियों ने लेवियों की सहायता के लिए उनके पूर्वजों को नियुक्त किया था। मैंने उन सभी पुरुषों के नाम सूचीबद्ध किए।

21वहाँ अहवा नहर के तट पर, मैंने हम सभी को उपवास (और प्रार्थना) करने की घोषणा की। मैंने उनसे कहा कि हमें अपने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन करना चाहिए। हमने प्रार्थना की कि यात्रा के दौरान परमेश्वर हमारी रक्षा करें और हमारे बच्चों और हमारी संपत्ति की भी रक्षा करें। **22**पहले हमने राजा से कहा था कि हमारा परमेश्वर उन सभी का ध्यान रखता है जो सच में उस पर भरोसा रखते हैं, पर उसका कोप उन पर अत्याधिक भड़कता है जो उसकी बात मानने से इनकार करते हैं। इसलिए मैं राजा से यह कहने के लिए लजाता था कि जब हम मार्ग में यात्रा पर हों तो हमारे शत्रुओं से हमारी रक्षा के लिए सैनिकों और घुड़सवारों को भेज दिया जाए। **23**इसलिए हमने उपवास किया और परमेश्वर से हमारी रक्षा करने के लिए कहा। हमने उससे प्रार्थना की, और उसने हमारी प्रार्थना का उत्तर दिया।

24मैंने शेरेब्याह और हशब्याह और दस अन्य लेवीय के साथ याजकों के अगुवों में से 12 को चुना। **25**मैंने उन्हें चाँदी और सोने की भेटें और अन्य मूल्यवान वस्तुओं को यरूशलेम पहुँचाने के लिए ठहराया। राजा और उसके सलाहकारों और अन्य अधिकारियों, और बाबेल में रहने वाले इस्राएलियों ने हमारे परमेश्वर के

मन्दिर के लिए ये योगदान दिया था। 26जब मैंने उन याजकों को ये विभिन्न वस्तुएँ दीं, तब मैंने प्रत्येक वस्तु को तौला। इनका कुल योग यह था: लगभग ढाई दशांश टन चाँदी, चाँदी से बनी वस्तुएँ जिनका वजन कुल मिलाकर तीन और एक तिहाई दशांश टन, तीन और एक तिहाई दशांश टन सोना था, 27सोने के 20 कटोरे जिनका कुल वजन लगभग साढ़े आठ किलोग्राम था, और दो पात्र जो चमकीले सुन्दर पीतल के बने हुए थे जो सोने जितने मूल्यवान थे। 28मैंने उन याजकों और लेवियों से कहा, 'तुम यहोवा के लिए विशेष रूप से अलग किए हुए हो। ये मूल्यवान वस्तुएँ उसी तरह उसके लिए विशेष महत्व की हैं। लोगों ने आप ही चाँदी और सोना को स्वेच्छा से यहोवा को, जिस परमेश्वर की आराधना हमारे पूर्वज करते थे, भेंट में चढ़ाने के लिए दिया। 29इसलिए उनकी सावधानी से रक्षा करो। जब हम यरूशलेम में पहुँचें, तब उन्हें अग्रणी याजकों और लेवियों और इस्राएल के अन्य अगुवों के सामने तौलना। {वे फिर उन्हें रखेंगे} नए मंदिर के भण्डारगृहों में।'

30इस कारण याजकों और लेवियों ने चाँदी, सोने, और भेंट में चढ़ाए जाने वाली अन्य मूल्यवान वस्तुएँ मुझ से ले लीं ताकि वे उन्हें यरूशलेम के भवन में ले जा सकें।

31पहले महीने के बारहवें दिन हमने अहवा नहर से कूच किया और यरूशलेम की ओर यात्रा करने लगे। हमारे परमेश्वर ने हमारी देखभाल की, और जब हम यात्रा कर रहे थे, तब उसने हमारे शत्रुओं और डाकुओं को हम पर हमला करने से रोका। 32यरूशलेम में पहुँचने के बाद हमने तीन दिन विश्राम किया। 33फिर हम चौथे दिन मन्दिर गए। वहाँ मन्दिर के कुछ अगुवों ने तौल कर चाँदी, सोना और अन्य वस्तुओं को ले लिया। इन अगुवों में से दो, ऊरिय्याह का पुत्र मरेमोत और पीनहास का पुत्र एलीआजर याजक थे, और दो, येशुअ का पुत्र योजाबाद और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह लेवीय थे। 34उन्होंने सब कुछ गिन लिया, और लिखा कि प्रत्येक वस्तु का वजन कितना था, और प्रत्येक वस्तु को लेते समय ही उसका विवरण लिखा।

35हम जो बाबेल में बँधुआई में गए थे, पर अब बँधुआई से लौट आए थे, ने अपने परमेश्वर को होमबलि की भेटें चढ़ाईं: सभी इस्राएलियों के लिए, 12 बैल, 96 मेढ़े और 77 मेम्ने। हमने उन सभी लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए 12 बकरियों की भी बलि दी। ये सब बलिदान वेदी पर ही यहोवा के लिए भेंट चढ़ाते समय पूरी तरह से जला दिए गए थे।

36बाबेल से लौटने वाले हम में से कुछ ने उस पत्र को ले लिया जो राजा ने हमें फ़रात नदी के पश्चिम वाले प्रान्त के राज्यपालों और अन्य अधिकारियों को देने के लिए दिया था। {पत्र को पढ़ने के बाद} उन्होंने अपनी योग्यता अनुसार हम इस्राएलियों और परमेश्वर के मन्दिर के लिए हर संभव सहायता की।”

Chapter 9

1"इसके बाद यहूदी अगुवे मेरे पास आकर कहने लगे, 'कि बहुत से इस्राएली, और यहाँ तक कि कुछ याजकों और लेवियों ने भी उस काम को करना नहीं छोड़ा जो इस देश में रहने वाले दूसरे लोग करते हैं। वे उसी घिनौने काम को कर रहे हैं जिसे ये लोग करते हैं। ये कनानी, हित्ती, परिज्जी, यबूसी, अम्मोनी, मोआबी, मिस्री और एमोरी लोगों के समूह हैं। 2विशेष रूप से, कुछ इस्राएली पुरुषों ने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो इस्राएली नहीं हैं, और उन्होंने अपने पुत्रों को भी ऐसा ही करने की अनुमति दी है। इसलिए हम, जो परमेश्वर के पवित्र लोग हैं, अब यहाँ रहने वाले अन्य समूहों से भिन्न नहीं हैं। वास्तव में, हमारे कुछ अगुवे और अधिकारी इस तरह के काम में परमेश्वर से विश्वासघात करने वालों में सबसे आगे रहे हैं!'

3जब मैंने यह सुना, तो मैंने अपना वस्त्र और बागा फाड़ डाला। मैंने अपने सिर और दाढ़ी में से कुछ बालों को नोच डाला। फिर मैं बैठ गया। मैं अचंभे में था। 4बहुत से यहूदी अभी भी विदेशी स्त्रियों से विवाह नहीं करने के लिए दी गई परमेश्वर की आज्ञा का आदर करते थे, और वे इस बात से परेशान थे कि बँधुओं में से कुछ ने इसकी अवज्ञा की थी। जब मैं उस दिन के शेष समय में चुपचाप बैठा रहा तो वे मेरे चारों ओर इकट्ठे हो गए।

5पर जब शाम को बलिदान चढ़ाने का समय आया, तो मैं वहाँ चुपचाप नहीं बैठा रहा। उन फटे हुए वस्त्रों को अभी भी पहिने हुए, मैं घुटनों के बल खड़ा हो गया, और अपने हाथों को यहोवा, मेरे परमेश्वर, की ओर प्रार्थना में फैला दिया, 6और मैंने यह प्रार्थना की: 'हे मेरे परमेश्वर, मैं बहुत ज्यादा लज्जित हूँ, यहाँ तक कि तेरे सामने प्रार्थना करने के लिए भी। निश्चय ही, हम इस्राएलियों द्वारा किए गए पाप बहुत बड़े हैं। यह ऐसे हैं कि मानो हमारे पाप हमारे सिर से भी ऊपर पहुँच गए हैं। जहाँ तक उन पापों को करने के प्रति हमारे दोष की बात है, यह ऐसा है कि मानो वह स्वर्ग पर चढ़ गए हों। 7हमारे पूर्वजों के समय से लेकर अब तक हम अत्याधिक दोषी रहे हैं। यही कारण है कि परमेश्वर ने अन्य देशों के राजाओं की सेनाओं से हमें और हमारे राजाओं और हमारे याजकों को पराजित होने दिया। उन्होंने हमारे कुछ लोगों को मार डाला, उन्होंने कुछ को कैद कर लिया, उन्होंने कुछ को लूट लिया, और उन्होंने सभी को अपमानित कर दिया जैसे हम आज पाए जाते हैं।

8पर पिछले कुछ दिनों में, हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तूने हम पर कृपा प्रगट की है। तूने हम में से कुछ को जीवित रहने दिया है। तूने हमें इस पवित्र स्थान पर सुरक्षित अवस्था में पहुँचाया है। तूने हमारी आत्माओं को बेदार किया है और हमें कुछ स्वतंत्रता दी है, भले ही फारसी राजा अभी भी हमारा स्वामी है। 9हाँ, हम तो गुलामों के समान हैं, फिर भी तूने हमें त्यागा नहीं। इसके स्थान पर, तूने फारस के राजाओं को हम पर दया दिखाने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने हमें कुछ स्वतंत्रता दी है और हमें तेरे नष्ट किए गए मंदिर के पुनर्निर्माण की अनुमति दी है। उन्होंने हमें यहाँ यहूदा प्रांत और यरूशलेम शहर में सुरक्षित रहने की भी अनुमति दी है।

10हे हमारे परमेश्वर, अब हम और क्या कह सकते हैं? तूने हमारे लिए जो कुछ किया, उतना होने पर भी हमने तेरी आज्ञाओं को नहीं माना। 11वे आज्ञाएँ जो तूने तेरे सेवक भविष्यद्वक्ताओं को हमारे लिए दिया था। उन्होंने हम से कहा था कि जिस भूमि पर हम अधिकार करेंगे, वह वहाँ रहने वाले लोगों के घिनौने कामों के कारण अशुद्ध भूमि है। उन्होंने कहा था कि उन लोगों द्वारा किए गए डरावने कामों ने उस देश के एक छोर से दूसरे छोर को गंदगी से भर गया। 12उन्होंने कहा था

कि हमें अपनी पुत्रियों की उनके पुत्रों के साथ विवाह में नहीं देना है! हमें अपने पुत्रों को उनकी पुत्रियों के साथ विवाह में देना चाहिए! हमें कभी भी उन लोगों के कल्याण के लिए भला करने का प्रयास नहीं करना चाहिए! उन्होंने कहा था कि अगर हम इन निर्देशों का पालन करेंगे तो हमारा देश सामर्थी होगा। हम भूमि पर उगने वाली अच्छी फसलों का आनंद लेंगे, और भूमि सदैव के लिए हमारे वंशजों की हो जाएगी।

13पर तूने हमें इसलिए दण्ड दिया क्योंकि हम बुरे काम करने में बड़े दोषी ठहरे। तौभी, तूने हमें उतना दण्ड नहीं दिया, जितना हमें मिलना चाहिए था। मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि, हे हमारे परमेश्वर, तूने हम में से कुछ को बचाए रखा है। **14**यद्यपि, हम में से कुछ फिर से तेरी आज्ञाओं की अवहेलना कर रहे हैं। हम उन लोगों के समूह की स्त्रियों से विवाह कर रहे हैं जो घिनौने कामों को करते हैं। यदि हम ऐसा ही करते रहे, तो हम तुझे इतना अधिक क्रोधित कर देंगे कि तू हमें पूरी तरह से नष्ट कर देगा।

15हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, तू सर्वदा सही काम करता है! क्योंकि तू उदार है, तूने हम में से कुछ को आज तक बचाए रखा है। हम मान लेते हैं कि हम तेरी आज्ञा की अवहेलना के दोषी हैं और इसलिए हमने जो किया है, उसके कारण हम प्रार्थना में तेरे सामने आने के योग्य नहीं हैं।'"

Chapter 10

1एज्रा मन्दिर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना कर रहा था और रो रहा था, वह [लोगों के किए हुए पापों को] अंगीकर कर रहा था। जब वह ऐसा कर ही रहा था, तो इस्राएलियों की एक बड़ी भीड़, पुरुष और स्त्री, बच्चे, उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए, क्योंकि वे भी बहुत ही ज्यादा व्याकुल थे।

2तब एलाम के घराने में से यहीएल का पुत्र शकन्याह बोल उठा। उसने एज्रा से यह कहा: "हमने अपने परमेश्वर की आज्ञा की अवहेलना की है। हम में से कुछ ने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो इस्राएली नहीं हैं। वे अन्यजातियों में से आती हैं जो हमारे आसपास रहती हैं। पर हम अब भी आशा {कर सकते हैं कि यहोवा दया करेगा} हम इस्राएलियों पर। **3**मैं यह सुझाव देता हूँ। हम उन लोगों के साथ जो परमेश्वर की आज्ञा का आदर करते हैं वही करेंगे जो तू हमें करने के लिए कहेगा। हम वही करेंगे जो परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था में हमें बताया है। हम अपने परमेश्वर के साथ करार बाँधेंगे। हम सभी अपनी विदेशी पत्नियों को तलाक देने और उन्हें उनके बच्चों के साथ अपने से दूर कर देंगे। **4**चूँकि यह तेरा दायित्व है कि तू हमें बताए कि क्या करना है, आगे कैसे बढ़ना है, और हियाव कैसे बाँधना है, और क्या करना आवश्यक है। हम तेरा समर्थन करेंगे।"

5तब एज्रा ने कार्यवाही की और चाहा कि याजक, लेविये, और अन्य सभी इस्राएलियों के अगुवे गंभीरता से घोषणा करें कि वे वही करेंगे जो शकन्याह ने कहा था कि उन्हें करना चाहिए था। इसलिए उन सभी ने ऐसा करने की प्रतिज्ञा ली। **6**तब एज्रा मन्दिर के सामने से चलकर उस कोठरी में गया जहाँ एल्याशीब का पुत्र यहोहानान रहता था। जब वह वहाँ गया तो उसने न तो कुछ खाया और न ही कुछ पीया। वह अब भी शोक कर रहा था क्योंकि बाबेल से लौटने वाले कुछ इस्राएलियों ने अपने विश्वासयोग्यता के कारण परमेश्वर की व्यवस्था का पालन नहीं किया था।

7तब अगुवों ने यहूदा प्रान्त और यरूशलेम नगर के सब लोगों के पास सन्देश भेजा। उन्होंने उनसे कहा कि बाबेल से लौटने वाले सभी को तुरन्त यरूशलेम आना होगा। **8**अगुवों ने तीन दिनों के भीतर नहीं आने वालों के लिए जुर्मानों की घोषणा की। वे उनकी सारी संपत्ति ले लेंगे, और वे उन्हें इस्राएलियों की मण्डली से बाहर कर देंगे। **9**इस कारण तीन दिनों के भीतर, अर्थात् नौवें महीने के 20वें दिन, यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों के सभी लोग यरूशलेम में इकट्ठे हुए। वे मन्दिर के सामने आँगन में बैठे थे। वे काँप रहे थे क्योंकि भारी वर्षा हो रही थी और {क्योंकि वे चिंतित थे कि उन्हें दण्डित किया जाएगा} उस कारण से जो उन्होंने किया था।

10तब एज्रा उठ खड़ा हुआ और उन से कहा, तुम में से कितनों ने परमेश्वर की आज्ञा न मानने का काम किया है। तुमने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो इस्राएली नहीं हैं। ऐसा करके तुमने हम इस्राएलियों को पहले से कहीं अधिक अपराधी ठहराया है। **11**पर अब, यहोवा के सामने अपना पाप अंगीकार करो, जिस परमेश्वर की आराधना तुम्हारे पूर्वज किया करते थे, और उसकी आज्ञा के अनुसार करो। अपनी विदेशी पत्नियों को तलाक देकर अन्यजातियों से अलग हो जाओ।"

12पूरी भीड़ ने ऊँची आवाज में चिल्लाते हुए उत्तर दिया, "हाँ, हमें वही करना चाहिए जो तूने कहा है। **13**पर हम एक बहुत बड़ा समूह हैं, और भारी वर्षा हो रही है। हम इस वर्षा में बाहर नहीं खड़े हो सकते हैं। और चूँकि हम में से बहुतों ने इस पाप को किया है, इसलिए चीजों को फिर से ठीक करने में बहुत अधिक समय लगेगा। **14**इसलिए हमारे अगुवों को यह निर्धारित करने दे कि हम सभी को क्या करना चाहिए। हर एक शहर में हर किसी से कहा जाए कि जिसने ऐसी स्त्री से विवाह किया जो इस्राएली नहीं है तो वह तेरे द्वारा निर्धारित समय पर यहाँ आए। वे अपने नगर से बुर्जुगों और न्यायियों के साथ आएँ। यदि हम ऐसा करते हैं, तो हमने जो कुछ किया है उसके कारण हमारा परमेश्वर हमसे क्रोधित होना बंद कर देगा।"

15भीड़ में से असाहेल का पुत्र योनातान और तिकवा का पुत्र यहजयाह ही इस बात से असहमत थे, और मशुल्लाम और लेवी के वंशज शब्बतै ने उनका साथ दिया। **16**पर बाबेल से लौटे सभी लोगों ने कहा कि वे ऐसा ही करेंगे। तब एज्रा ने उनके घराने के अनुसार ऐसे पुरुषों को चुन लिया जो अगुवे थे और उनके नाम लिख लिए। दसवें महीने के पहले दिन ये लोग इस विषय की जाँच करने के लिए इकट्ठे हुए। **17**अगले वर्ष के पहले महीने के पहले दिन तक वे यह निर्धारित कर चुके थे कि किन पुरुषों ने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया है जो इस्राएली नहीं थीं।

18कुछ याजकों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था। ये योसादाक के पुत्र येशुअ और उसके भाइयों के कुछ वंशज थे। उनके नाम मासेयाह, एलीएजेर, यारीब और गदल्याह थे। **19**उन्होंने गम्भीरता से अपनी पत्नियों को त्यागने की प्रतिज्ञा की, और उनमें से हर एक ने अपने पापों के लिए प्रायश्चित के लिए एक एक मेढ़े का बलिदान किया।

20इम्मेर के घराने में हनानी और जबद्याह।

21हारीम के घराने में से मासेयाह, एलिय्याह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह।

22पशहूर के घराने में से एल्योएनै, मासेयाह, इश्माएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा।

23विदेशी स्त्रियों में विवाह करने वाले लेवियों में योजाबाद, शिमी, केलायाह (जिसका दूसरा नाम कलीता था), पतह्याह, यहूदा और एलीएजेर थे।

24वहाँ पर संगीतकार एल्याशीब था। मन्दिर के पहरेदारों में शल्लूम, तेलेम और ऊरी थे।

25इस्राएलियों के अन्य नामों की सूची यह है {जिन्होंने विदेशी पत्नियों से विवाह किया था}:

परोश के घराने में रम्याह, यिज्जियाह, मल्कियाह, मिय्यामीन, एलीआजर, मल्कियाह और बनायाह थे।

26एलाम के घराने में से मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल, अब्दी, यरेमोत और एलिय्याह थे।

27जत्तू के घराने में से एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अज़ीज़ा थे।

28बेबै के घराने में यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै थे।

29बानी के घराने में से मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब और शाल और यरेमोत थे।

30पहत्मोआब के घराने में से अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे थे।

31हारीम के घराने में से एलीएजेर, यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन, **32**बिन्यामीन, मल्लूक और शेमर्याह थे।

33हाशूम के घराने में से मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी थे।

34बानी के घराने में मादै, अम्राम, ऊएल, **35**बनायाह, बेदयाह, कलूही, **36**वन्याह, मरेमोत, एल्याशीब, **37**मत्तन्याह, मत्तनै और यासू थे।

38बिन्नूई के घराने में से शिमी, **39**शेलेम्याह, नातान, अदायाह, **40**मक्नदबै, शाशै, शारै, **41**अजरेल, शेलेम्याह, शेमर्याह, **42**शल्लूम, अमर्याह और यूसुफ थे।

43नबो के घराने में यीएल, मत्तित्याह, जाबाद, जबीना, यद्दई, योएल और बनायाह थे। **44**उन सब पुरुषों ने ऐसी स्त्रियों से विवाह किया था जो इस्राएली नहीं थीं। उनमें से कुछ ऐसी स्त्रियाँ थीं जिन्होंने बच्चे जन्में थे।

योगदानकर्ताओं

Hindi GST - Greek Aligned योगदानकर्ताओं

Acsah Jacob
Amos Khokhar
Dr. Bobby Chellapan
Hind Prakash
Jinu Jacob
M.V Sunny
Robin
Vipin Bhadran
Zipson George